ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, *RNI:UPBIL04292,REG.No.:561/2013-14,* *Vol.-I, No.-1,* **PP-124-126**, *YEAR 2014*

प्राचीन भारतीय धार्मिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दू, बौद्ध एवं जैन सम्प्रदाय

❑ संजय कुमार सिंह*

प्राचीन भारत में मुख्य रूप से तीन धार्मिक सम्प्रदाय थे– हिन्दू, बौद्ध और जैन। जो आज भी किसी न किसी रूप में मौजूद है। धार्मिक तथ्यों के विश्लेषण से साामान्य सिद्धान्तों की खोज करना धर्मशास्त्र का मुख्य उद्देश्य है। धर्मशास्त्र ईश्वर विचारों पर केन्द्रित है। धर्मशास्त्र में ईश्वर विचार के अतिरिक्त अन्य प्रश्नों पर भी विचार किया गया है। धर्मशास्त्र में इन प्रश्नों पर भी विचार किया गया है, कि ईश्वर क्या है? ईश्वर के अस्तित्व का क्या प्रमाण है? ईश्वर के क्या गुण है? सृष्टि की समस्या क्या है? मनुष्य अमर है या मरणशील है? आत्मा का अस्तित्व क्या है? अब प्रश्न उठता है कि धर्म क्या है? धर्म तो सत्य का प्रतिष्ठापक है। तामसी वृतियों का अवरोधक है। चरित्र निर्माण का संदेशवाहक है। सुख–शान्ति एवं समृद्धि का स्रोत है। पूजा–अर्चना, स्नान–ध्यान, व्रत त्योहार के माध्यम से धर्म श्राद्धा का उत्प्रेरक है। भारतीय विचारक के अनुसार 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है, धारण करना या बनाये रखना। छादोग्य उपनिषद में धर्म की तीन शाखाओं का उल्लेख किया गया है, जिनका सम्बन्ध गृहस्थ, तपस्वी और ब्राह्मचारी के कर्त्तव्यों से है। ईश्वर पुण्य और परलोक की भावना ने धर्म के अर्थ को पूरी तरह बदल दिया। आज धर्म शब्द नहाने, माला जपने, चन्दन लगाने, तीर्थ दर्शन करने और कथा सुनने आदि कार्यो तक सीमित रह गया है। पहले धर्म का अर्थ था कर्तव्य, सामाजिक उन्नति के लिए निश्चित किये गये नियम, व्यक्तिगत विशेषता आदि। धर्म की परिभाषा महाभारत में अत्यन्त स्पष्ट और पूर्णरूप से दी गयी है। धारण करने के कारण इसका नाम धर्म है, धर्म के द्वारा ही प्रजाये स्थिर है। इसलिए धारण करने वाले नियमों का ही नाम धर्म हैं।

बौद्ध के लिये धर्म, बुद्ध और संध या समाज के साथ–साथ त्रिरत्न (तीन रत्न) में से एक है। वैशेषिक सूत्रों में धर्म की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि जिससे आनन्द (अभ्युदय) और परमानन्द (निःश्रेयस) की प्राप्ति हो, वही धर्म है। सभी धर्मो का सर्वस्वीकृत मूल सिद्धान्त यह है कि परमात्मा प्रत्येक जीवित प्राणी के ह्रदय में निवास करता है। इसलिए दूसरों को हमें अपने ही जैसा समझना चाहिए और मन, कर्म और वचन से निरन्तर दूसरों की कल्याण के कार्य करना चाहिए यही धर्म है। भगवतगीता के चतुर्थ अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा है कि ''जब–जब पृथ्वी पर धर्म की हानि और अधर्म में वृद्धि होती है तब–तब मैं स्वयं प्रकट होता हूँ। साधु–संतों की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए, धर्म की स्थापना करने हेतु मैं प्रत्येक युग में प्रकट होता हूँ। भगवतगीता में कहा गया है कि–

''यदा–यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मान सृजाम्यहम्,
परित्राणाय साधुनां विनाशाच च दुष्कृताम्,
धर्मसंस्थापनार्थाय संभावानि युगे युगे।''

धार्मिक उथल–पुथल के फलस्वरूप भारतीय वसुधा पर जिन तीन धार्मिक सम्प्रदायों का उदय हुआ वह है– हिन्दू, बौद्ध एवं जैन सम्प्रदाय। हिन्दू सम्प्रदाय का सम्बन्ध वैदिक धर्म से है, जबकि बौद्ध और जैन सम्प्रदाय अवैदिक धर्म है। वैष्णव और शैव सम्प्रदाय क्रमशः विष्णु और शिव के चारों ओर केन्द्रीत है जबकि बौद्ध धर्म जैन सम्प्रदाय बुद्ध और महावीर को छोड़कर किसी अन्य देवताओं को स्थान नहीं दिया हैं बौद्ध एवं जैन धर्म में लोगों के नैतिक एवं आध्यात्मिक जीवन का अनुशासित करने के लिए नियम दिये और जीवन मृत्यु, सुख–दुख आदि की

*शोधार्थी

रहस्यपूर्ण समस्याओं का निराकरण सरल ढंग से करने का मार्ग प्रशस्त किये है। वर्गभेद, उच्च–नीच की भावना और जाति भेद के बन्धनों को इस धर्म में अस्वीकार किया गया हैं। जिस प्रकार वैष्णव एवं शैव सम्प्रदाय में कुछ बातें एक–दूसरे से मिलती–जुलती जैसे संसार, का दुःखमय होना, धर्म का लक्ष्य जीवन–मरण के चक्र से छुटकारा दिलाना, यज्ञ एवं देवपूजन को माक्ष का साधन न मानकर शुद्ध एवं पवित्र आचरण पर बल देना, पुनर्जन्म से मुक्ति के लिए जीवन से सन्यास को आवश्यक मानना आदि। वैसे तो बौद्ध और जैन दोनों धर्मो का मार्ग भिन्न है। इनके दार्शनिक आधार भी भिन्न है, तथा इनके आचरण संहिता में भी अन्तर हैं। जैन धर्म से कठोर तपस्या पर बल दिया है, प्राणान्त को मान्यता दी है, तथा नग्न रहने को अच्छा माना हैं। परन्तु बौद्ध धर्म मध्यम मार्ग को अपनाने पर बल दिये है। मौर्य एवं गुप्त काल में वैष्णव सम्प्रदाय का अधिक विकास हुआ। कृष्ण को विष्णु का अवतार ही माने जाने लगे। इस युग में भागवत मत् की लोकप्रियता बहुत बढ़ गयी है। यवन हेलियोडोत्स ने भी भगवतमत को अंगीकार किया। इस काल के सिक्कों पर विष्णु का अंकन हुआ। पंचाल सिक्कों पर विष्णु का अंकन हुआ हैं। कुषाणकालीन अनेक विष्णु की प्रतिमाये मिली है, जो वैष्णव मत की लोकप्रियता का प्रमाण है।

गुप्तकाल में विष्णु के अवतारों की पूजा विशेषरूप से लोकप्रियत थी। समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय और कुमार गुप्त सभी वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। तिगवा (जबलपुर म0प्र0) का विष्णु मंदिर, देवगढ़ (झाँसी) का दशावतार मंदिर, एरण का विष्णु मंदिर गुप्त काल के ही है। भगवान शिव से सम्बन्धित धर्म को शैव कहा गया है। ऋग्वेद में शिव का रूद्र कहा गया है। हड़प्पा सभ्यता से भी शिव के प्रतीक मिले है। अतः यह भारत का सबसे प्राचीन धर्म है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से पता चलता है कि मौर्य काल में शिव की पूजा प्रचलित थी। पुराणों में लिंग पूजा का उल्लेख मिलता है। लिंग के रूप में मोहनजोदड़ों और हड़प्पा काल से ही शिव की पूजा होती थी। ह्वेनसांग वाराणसी को शैव धर्म का प्रमुख केन्द्र बतलाया है। कालिदास, भवभूति, सुबन्धु एवं वाणभट्ट सभी शैव धर्म के उपासक थे। राष्ट्रकुट नरेश कृष्णदत्त द्वितीय, चोल शासक राजा राजराज, राजेन्द्र चोल आदि नरेशों ने कई शिव मंदिर बनावाये और शैव सम्प्रदाय का प्रचार–प्रसार करवाये। शैव सम्प्रदाय के अनुयायी नयनार कहलाते थे, जिनकी संख्या 63 थी। जिसमें अप्पार, तिरूज्ञान, सम्बन्दर, सुन्दर मूर्ति एवं मणिकवाचगर का नाम प्रमुख है। विभिन्न सम्प्रदाय– लिंगायत, कश्मीरी कपालिक और पशुपति शैव सम्प्रदाय में विभाजित थे। हिन्दू धर्म में वैष्णव एवं शैव सम्प्रदाय की तरह शक्ति सम्प्रदाय का भी उदय हुआ। मातृदेवी की पूजा के प्रचलन ने शक्ति–पूजा की कल्पना को निश्चित स्वरूप देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। आज ही भारतवासी उमा, पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, काली, चण्डी, गौरी, कौमारी, ब्राह्मी, महेश्वरी, वैष्णवी, महेन्द्री, चारमुण्डा, महिषासुर मर्दिनी और कात्यायनी आदि देवियों की पूजा करते है।

साहित्यिक स्रोतों से ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म की तरह बौद्ध धर्म भी कई सम्प्रदाय में बॅट गये– जिनमें हीनयान, महायान और व्रजयान सम्प्रदाय प्रमुख है। बौद्ध धर्म ने भी विदेशियों को आकर्षित किया। यवन नरेश मिनाण्डर ने बौद्ध हो गया। कुषाण नरेश एवं उसके उत्तराधिकारी बौद्ध धर्मालम्बी थे। महायान धर्म ने बौद्ध धर्म में एक महान परिवर्तन लाया। मथुरा एवं गन्धार के शिल्पियों ने बुद्ध की प्रतिमायें निर्मित की। भारत के विभिन्न हिस्सा से बौद्ध धर्म के लोकप्रियता का प्रमाण मिलते है। मथुरा बौद्धों का केन्द्र था। दक्कन में नासिक क्षेत्र से प्राप्त सातवाहनों के लेखों से अनेक बौद्ध सम्प्रदाय की जानकारी मिलती है। महासंधिक सम्प्रदाय को महायान धर्म का अग्रदूत कहा जाता है। महायान मत को नागार्जुन एवं असंग जैसे बौद्ध विद्वानों ने अपने सशक्त तर्को से लोगो के बीच लोकप्रिय बनाया। बौद्ध धर्म का एक अन्य शाखा योगाचार थी। इस शाखा का विज्ञानवादिन भी कहा गया है। योगाचार के अतिरिक्त महायान सम्प्रदाय की एक अन्य शाखा माध्यमिक थी।

जैन धर्म भी बौद्ध धर्म के समकालीन थे। यह धर्म भी भारत का एक लोकप्रिय धर्म था। इस धर्म के दो मुख्य सम्प्रदाय– दिगम्बर और श्वेताम्बर थे। 300 ई0 पू0 मे जब प्रथम जैन संगीति स्थूलभद्र की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में हुई थी तो भद्रबाहु ने इस जैन संगीति का बहिष्कार किया था। जिसके परिणाम स्वरूप यह धर्म उपर्युक्त दो सम्प्रदाय में विभाजित हो गया। महावीर स्वामी के निर्वाण के समय में इस धर्म के अनुयायियों की संख्या लगभग 14000 थी। दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार–प्रसार का श्रेय भद्रबाहु को जाता है। मौर्योत्तर काल में कलिंग जैनियों का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। कलिंग का राजा खारवेल ने जैन धर्म को स्वीकार किया था। पुरातात्विक साक्ष्यों से प्रमाणित होता है कि मथुरा भी जैन धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। चौबीस तीर्थकरों के अतिरिक्त अनेक देवी–देवताओं का भी उल्लेख जैन साहित्य में हुआ है। जैनियों ने बौद्धों की तरह स्तूप निर्माण की परम्परा को अपनाया। जैन धर्म भी बौद्धों की तरह वर्ण व्यवस्था में विश्वास नहीं करता था। गुप्तकाल में जैन धर्म की प्रगति हुई। मथुरा एवं बलभी में हुई संगीतियों ने जैन धर्मग्रन्थों की शुद्धता स्थापित की। मालवा, उत्तर प्रदेश, बंगाल तथा दक्षिण भारत में जैनमत के प्रचलित होने का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। कर्नाटक में जैनियों का प्रवेश हुआ और श्रवण बेलगोल इनका केन्द्र बना। पाटलिपुत्र से चन्द्रगुप्त मौर्य के समय जैनियों का दक्षिण की ओर जाने का उल्लेख मिलता है। दक्षिण के विभिन्न देशों के नरेशों ने जैन धर्म को प्रश्रय दिया। काँची जैन धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बना। परन्तु सातवीं शताब्दी में जैन धर्म को गहरा धक्का लगा। शैव सम्प्रदाय के प्रचार एवं प्रसार के फलस्वरूप जैन एवं बौद्ध धर्म पतन की ओर अग्रसर हो गये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ0 एस0 राधाकृष्णन्–धर्म और समाज, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1967
2. डॉ0 एस0 राधाकृष्णन्–धर्म तुलनात्मक दृष्टि में, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, 1966
3. अरूण कुमार– साम्प्रदायिकताः अतीत और वर्तमान, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, 2009
4. धीरेन्द्र कुमार– भारतीय बौद्ध केन्द्र, विशाल प0 पटना, 2007
5. डॉ0 आभा कुमारी– धर्म का सामाजिक महत्त्व पुष्पांजलि प्रकाशन दिल्ली, 2010
6. डॉ0 मधुबाला सिंहा– तथागत एण्ड बुद्धिज्म, पुष्पांजलि प्रकाशन दिल्ली, 2010
7. डॉ0 ब्रजकिशोर पाण्डेय – कनसेप्ट एण्ड मेनिंग ऑफ लाइफ इन बुद्धिज्म, पुष्पांजलि प्रकाशन, दिल्ली, 2010